‘‘संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी परिवेश, संस्कृति और संघर्ष’’

राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

मानविकी संकाय, हिन्दी विभाग में पीएच0डी0 हेतु प्रस्तावित

शोध–प्रस्ताव की रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ0 सुनीता यादव

प्राध्यापक हिन्दी विभाग

राँची विश्वविद्यालय

राँची (झारखण्ड)

मो0– +919835152016

शोधार्थी

सरिता मिंज

हिन्दी विभाग

राँची विश्वविद्यालय

राँची (झारखण्ड)

मो0– +916202026625

राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

2024

सहमति पत्र

सरिता मिंज को राँची विश्वविद्यालय, राँची की पीएच0डी0 शोध–उपाधि के लिए **''संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी परिवेश, संस्कृति और संघर्ष''** विषयक शोध–प्रस्ताव पर शोध–निर्देशन हेतु मैं सहमति प्रदान करती हूँ।

डॉ0 सुनीता यादव
अध्यक्ष सह एसोसिएट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

<u>घोषणा पत्र</u>

मैं सरिता मिंज, शोधार्थी घोषणा करती हूँ कि मेरे द्वारा चयनित विषय **''संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी परिवेश, संस्कृति और संघर्ष''** पर पीएच0डी0 उपाधि हेतु अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मैं **डॉ0 सुनीता यादव** अध्यक्ष सह एसोसिएट प्रोफेसर, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के निर्देशन में शोध कार्य करना चाहती हूँ।

मेरे द्वारा प्रस्तावित शोध कार्य मौलिक एवं नवीन होगा।

शोधार्थी

सरिता मिंज

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी परिवेश, संस्कृति और संघर्ष

प्रस्तावना

संजीव के साहित्य में आदिवासी पर्यावरण, संस्कृति और संघर्ष की गहरी झलक मिलती है, जो आदिवासी जीवन की प्रमाणिक तस्वीर पेश करती है और उनके अस्तित्व और गरिमा के लिए चल रहे संघर्षों को उजागर करती है। उनके कथानकों में आदिवासी जीवन की जीवंतता और उनके शोषण, हाशिए पर धकेले जाने, और सांस्कृतिक क्षरण के खिलाफ संघर्ष को प्रमुखता से दर्शाया गया है। भारतीय आदिवासी समुदायों को अपनी परंपराओं और जीवनशैली को बचाए रखने में हमेशा से कठिनाइयों को सामना करना पड़ा है, क्योंकि आधुनिकता, औद्योगीकरण और राजनीतिक उपेक्षा उनके प्राकृतिक परिवेश पर लगातार खतरा बनती रही है। संजीव अपने साहित्य के माध्यम से इन मुद्दों को सामने लाते हैं, उन आदिवासी समुदायों की आवाज बनते हैं जिन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। उनकी कहानियों में आदिवासी जीवन का चित्रण केवल उनके दैनिक जीवन की एक जीवंत प्रस्तुति नहीं है, बल्कि उन शक्तियों की तीव्र आलोचना भी है जो ऐतिहासिक रूप से और आज भी उन्हें शोषित करती हैं।

संजीव के साहित्य के केन्द्र में आदिवासी समुदायों और उनके प्राकृतिक पर्यावरण के बीच गहरे संबंध की खोज है। आदिवासी पारंपरिक रूप से प्रकृति के साथ घनिष्ठ सामजस्य में रहते आए हैं, अपनी जीविका, आश्रय और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए उस पर निर्भर रहते हैं। संजीव इस संबंध को संवेदनशीलता और गहराई के साथ प्रस्तुत करते हैं, यह दर्शाते हुए कि जंगल, नदियाँ और पहाड़ आदिवासियों के लिए केवल भौतिक स्थल नहीं हैं, बल्कि उनके अस्तित्व और दृष्टिकोण का अभिन्न हिस्सा हैं। हालांकि, यह पर्यावरण, जो उनके अस्तित्व का केन्द्रीय भाग है, निरंतर खतरे में है। औद्योगीकरण, वनों की कटाई, खनन गतिविधियाँ और सरकारी तथा निजी संस्थाओं द्वारा भूमि अधिग्रहण उनके पारंपरिक जीवन को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं। संजीव का साहित्य इन ताकतों के आदिवासी जीवन पर विनाशकारी प्रभावों को उजागर करता है, क्योंकि उन्हें अपने प्राकृतिक आवास के तेजी से क्षरण के बीच संघर्ष करना पड़ता है।

सांस्कृतिक रूप से, संजीव की कहानियों में आदिवासी समुदायों की परंपराएं, लोक कथाएं और रीति–रिवाज समृद्ध हैं, जो पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। वह आदिवासी अनुष्ठानों, उनके संगीत और नृत्य और उनके सामुदायिक जीवन की संजीव तस्वीर पेश करते हैं। हालांकि, इस सांस्कृतिक धरोहर पर बाहरी प्रभावों से लगातार खतरा बना हुआ है। संजीव यह दिखाते हैं कि कैसे आधुनिकता और मुख्यधारा के समाज में समाहित होने का दबाव आदिवासी लोगों की सांस्कृतिक पहचान को खोने पर मजबूर कर रहा है। विशेष रूप, युवा पीढ़ी खुद को अपने विरासत को बचाने और उन आधुनिक जीवनशैलियों को अपनाने के बीच उलझा हुआ पाते हैं, जो अक्सर उन पर थोपे जाते हैं। संजीव के साहित्य में परंपरा और आधुनिकता के बीच टकराव एक प्रमुख विषय है, जिसमें आदिवासी पात्र तेजी से बदलती दुनिया में जीने की जटिलताओं का सामना करते हैं।

संज्ञानात्मक और भौतिक रूप से अस्तित्व के लिए संघर्ष, संजीव की कथा साहित्य के केन्द्र में है। उनके साहित्य में आदिवासी न केवल आर्थिक कठिनाइयों से जूझते हैं, बल्कि अपने अधिकारों और गरिमा के लिए भी लड़ते हैं। आदिवासी श्रम, भूमि और संसाधनों का शोषण अधिक शक्तिशाली समूहों द्वारा जिनमें जमींदार, उद्‌योगपति और यहां तक कि राज्य भी शामिल हैं, बार–बार सामने आता है। संजीव के पात्रों को अक्सर विस्थापन, गरीबी और निराशा के चक्र में फंसा देता है। फिर भी, इस संघर्ष के बीच, प्रतिरोध भी है। संजीव आदिवासी लोगों की उस साहसिकता और दृढ़ता को दर्शाते हैं जो तमाम मुश्किलों के बावजूद न्याय और समाज में अपनी सही जगह के लिए संघर्ष जारी रखते हैं।

संज्ञानात्मक संघर्ष के बीच, संजीव की कथा साहित्य में महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह अक्सर महिलाओं के पात्रों को केन्द्र में रखते हैं उनके सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों का चित्रण करते हैं। आदिवासी महिलाएं केवल घर संभालने और बच्चों की देखभाल करने तक सीमित नहीं है, बल्कि वे शोषण के खिलाफ प्रतिरोध में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। संजीव आदिवासी महिलाओं को साहसी और दृढ़ संकल्पित दिखाते हैं, जो सामाजिक परिवर्तन के मोर्चे पर खड़ी हैं और अस्तित्व तथा प्रतिरोध की भावना का प्रतीक हैं।

अंततः संजीव का साहित्य भारतीय आदिवासी समुदायों के सतत संघर्ष पर गहरा विचार प्रस्तुत करता है। उनके साहित्यिक कार्य शोषण, सांस्कृतिक ह्रास और पर्यावरणीय क्षरण के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिनका सामना ये हाशिए पर रहने वाले समूह करते हैं। हालांकि, उनके कार्य आदिवासी जीवन की समृद्धता, गरिमा और जीवटता का भी उत्सव मनाते हैं, जिससे पाठकों को एक ऐसे विश्व की झलक मिलती है, जो एक ओर संकट में है और दूसरी ओर अपनी पहचान बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहा है। संजीव के साहित्य में आदिवासी पर्यावरण, संस्कृति और संघर्ष का सूक्ष्म चित्रण हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि आधुनिकता और न्याय के जटिल मुद्दों से निपटने के लिए सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक न्याय कितना महत्वपूर्ण है।

संजीव : व्यक्तिगत जीवन

मूर्धन्य कथाकार संजीव का जन्म 6 जूलाई, 1947 को सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। 38 वर्षों तक एक रासायनिक प्रयोगशाला में कार्यरत रहे। सात वर्षों तक 'हंस' समेत कई पत्रिकाओं का सम्पादन और स्तम्भ–लेखन किया। लगभग दो वर्षों तक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा और अन्य विश्वविद्यालयों में अतिथि लेखक रहे। संजीव का अनुभव–संसार विविधताओं से भरा हुआ है। साक्षी हैं उनकी प्रायः दो सौ कहानियां और 'अहेर', 'सर्कस', 'सावधान', नीचे आग है, 'धार', 'पांव तले की दूब', 'जंगल जहां शुरू होता है,' 'सूत्रधार', 'आकाश चम्पा', 'रह गईं दिशाएं इसी पार', 'फांस', 'रानी की सराय', 'मुझे पहचानो' आदि उपन्यास। नवीवनतम कृतियां हैं छत्रपति शाहू जी पर केन्द्रित उपन्यास 'प्रत्यंचा', पुरबी के अनन्य गायक महेन्द्र मिश्र पर केन्द्रित उपन्यास 'पुरबी बयार' और 'प्रतिनिधि कहानियां। कुछ कृतियों पर फिल्में बनी हैं, कुछ की उन्होंने पटकथाएं लिखी हैं। उन्हें 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार', 'कथाक्रम सम्मान', 'इन्दु शर्मा अंतरराष्ट्रीय कथा सम्मान', 'पहल कथा सम्मान', 'सुधा कथा सम्मान', 'श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान' समेत अनेक सम्मान प्रदान किए जा चुके हैं।

संजीव की कथा साहित्य में आदिवासी जीवन (साहित्यिक लेखन)

संजीव की कहानियों में जनजातियों के प्रति एक गहरी संवेदना और उनकी प्रत्येक लाइन में उनके संघर्ष को पिरोया है जिसमें जनजातीय जीवन का गहरा और संवेदनशील चित्रण

मिलता है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में आदिवासी समाज, उनकी संस्कृतिक, संघर्ष और प्राकृतिक परिवेश के प्रति उनकी आत्मीयता को बखूबी दर्शाया गया है। संजीव ने अपने साहित्य में जनजातीय जीवन की विविध समस्याओं, शोषण, आधुनिकता के प्रभावों, और उनकी अस्मिता के लिए किए गए संघर्षो को केन्द्र में रखा है। उनके प्रत्येक कृति में बखूबी देखने को मिलता है संजीव की ये रचनाएं फांस, सूत्रधार, जंगल जहां शुरू होता है, आखिरी पड़ाव का दुःख, और रह गई दिशाएं इसी पर आदिवासी समाज की जटिलताओं और उनके साथ होने वाले शोषण और अन्याय को प्रमुखता से उजागर करती हैं। उन्होंने अपने साहित्य में आदिवासी जीवन के हर पहलू को, चाहे वह उनके सामाजिक–आर्थिक संघर्ष हो या उनके सांस्कृतिक मूल्य, गहराई से प्रस्तुत किया है। उनकी कुछ कहानियों का सारांश निम्नलिखित है।

पांव तले की दुब (1995)

''पांव तले की दुब'' का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, जो आदिवासी जीवन और उनकी सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों को संजीव रूप में प्रस्तुत करता है। यह कहानी मुख्यतः एक आदिवासी गांव के जीवन के इर्द–गिर्द घूमती है, जहां पात्रों के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया गया है। उपन्यास में दर्शाया गया है कि कैसे आदिवासी समुदाय अपनी पहचान, अधिकार और प्राकृतिक संसाधनों के लिए संघर्ष कर रहा है। संजीव ने इस रचना में समाज की कड़वी सच्चाइयों को गहराई से समझाया है, जिसमें सामाजिक असमानता, शोषण और सांस्कृतिक विस्थापन शामिल हैं। ''पांव तले की दुब'' में पात्रों के माध्यम से उनकी परंपराएं, रिश्ते और दर्द को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

यह उपन्यास न केवल आदिवासी जीवन की चुनौतियों को दर्शाता है, बल्कि समाज के प्रति एक महत्वपूर्ण संदेश भी देता है। पाठको को यह सोचने पर मजबूर करता है कि हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम आदिवासी समुदायों के अधिकारों और उनकी पहचान की रक्षा करें।

जंगल जहां शुरू होता है (2000)

''जंगल जहां शुरू होता है'' संजीव का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, जो आदिवासी जीवन और उनके जंगलों के गहरे संबंध को उजागर करता है। इस उपन्यास में आदिवासियों के जीवन, उनकी परंपराओं, और उनके अधिकारों के लिए संघर्ष को बारीकी से दर्शाया गया है। कहानी एक आदिवासी समुदाय के इर्द–गिर्द घूमती है, जो अपनी भूमि और जंगल को बचाने के लिए बाहरी शक्तियों के खिलाफ लड़ाई लड़ रहा है। संजीव ने जंगल को केवल एक भौतिक स्थान नहीं, बल्कि एक संवेदनशील सांस्कृतिक पहचान के रूप में प्रस्तुत किया है। उपन्यास में आदिवासी जीवन की कठिनाइयां, उनके धार्मिक विश्वास, और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा के लिए उनकी जद्दोजहद को गहराई से दिखाया गया है। ''जंगल जहां शुरू होता है'' न केवल एक कथा है, बल्कि यह आदिवासी समुदाय की अस्मिता, उनके संघर्ष और प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति उनकी अनन्य श्रद्धा का एक सशक्त चित्रण भी है। यह पाठकों को उनके दर्द और संघर्ष को समझने के लिए प्रेरित करता है।

सूत्रधार (2003)

सूत्रधार, संजीव का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, जो समाज के जटिल ताने–बाने और मानवी संबंधों को गहराई से परखता है। इस उपन्यास में एक साधारण व्यक्ति की कहानी के माध्यम से आधुनिकता और परंपरा के बीच के टकराव को प्रस्तुत किया गया है। नायक की यात्रा उसके व्यक्तिगत संघर्ष, सपनों और सामाजिक दबावों के इर्द–गिर्द घूमती है। ''सूत्रधार'' में संजीव ने चारित्रों के माध्यम से मानव जीवन की विविधता, संघर्ष और रिश्तों की जटिलताओं को बखूबी उकेरा है। उपन्यास में आदिवासी संस्कृति, उनकी पहचान, और उनकी समस्याओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कैसे एक व्यक्ति की कहानी समाज की व्यापक तस्वीर को प्रतिबिंबित करती है। संजीव की लेखनी में गहराई और संवेदनशीलता है, जो पाठक को सोचने पर मजबूर करती है और उनके समाज के मुद्दों के प्रति जागरूक करती है। ''सूत्रधार'' एक ऐसे सूत्र की तरह कार्य करता है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को जोड़ता है।

फांस (2015)

फांस संजीव का एक प्रसिद्ध उपन्यास है, जिसे वाणी प्रकाशन द्वारा सन 2015 में प्रकाशित किया गया था जो आदिवासी जीवन के संघर्षों, शोषण और अस्तित्व की जटिलताओं को

उजागर करता है। इस उपन्यास का केन्द्र बिंदु समाज है, जो अपने जल, जंगल और जमीन से जुड़े जीवन के लिए लगातार लड़ता है। ''फांस'' में आदिवासी समाज पर आधुनिक विकास, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के प्रभावों को बारीकी से दर्शाया गया है, जहां आदिवासियों को उनकी भूमि से बेदखल किया जाता है और उनके प्राकृतिक संसाधनों पर बाहरी लोग कब्जा जमाते हैं। संज्ञानात्मक शोषण, आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक विस्थापना जैसी समस्याएं इस उपन्यास में प्रमुख रूप से उभरकर सामने आती हैं। उपन्यास न केवल आदिवासियों के दर्द और संघर्ष को सामने लाता है, बल्कि उनके अधिकारों और उनकी सांस्कृतिक अस्मिता को बचाने के लिए किए जा रहे संघर्षों का भी समर्थन करता है। ''फांस'' आदिवासी समाज के लिए न्याय, पहचान और अस्तित्व की लड़ाई का एक सशक्त चित्रण है।

रह गई दिशाएं इसी पार (2018)

''रह गई दिशाएं इसी पार'' संजीव का एक प्रभावशाली उपन्यास है, जो आदिवासी समुदाय के जीवन, उनकी संघर्षों और उनके सांस्कृतिक मूल्य को बखूबी चित्रित करता है। यह कहानी एक छोटे से आदिवासी गांव के इर्द–गिर्द घूमती है, जहां निवासी अपने जल, जंगल और जमीन के लिए लगातार संघर्ष कर रहे है। उपन्यास में आदिवासियों की जड़ों से जुड़ी जीवनशैली, उनकी परंपराएं और बाहरी दुनिया के प्रभाव को दर्शाया गया है। संजीव ने इस रचना में सामाजिक असमानता, शोषण और न्याय की मांग को उठाया है, जिससे पाठक आदिवासी समुदाय की पीड़ा और उनकी दृढ़ता को महसूस कर सके। कहानी में पात्रों की गहराई और उनके संबंधों की जटिलता को भी बारीकी से दर्शाया गया है, जो इसे और अधिक वास्तविक बनाती है। ''रह गई दिशाएं इसी पार'' एक विचारशील उपन्यास है, जो आदिवासी अस्मिता और उनके अस्तित्व की लड़ाई को सशक्त तरीके से प्रस्तुत करता है।

शोध की प्रेरणा

संजीव भारतीय कथा साहित्य के प्रमुख लेखकों में से एक हैं, जिन्होंने अपने साहित्य में समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गो, विशेषकर आदिवासी समुदायों के जीवन, उनकी संस्कृति, संघर्ष और अस्मिता को प्रमुखता से चित्रित किया है। भारतीय साहित्य में

आदिवासी समाज और उनके संघर्ष को अक्सर उपेक्षित किया गया है। मुख्यदारा की साहित्यिक धारा में आदिवासी समुदायों की समस्याओं, उनकी सांस्कृतिक पहचान और उनके जीवन संघर्षो को उचित स्थान नहीं मिला है। संजीव के साहित्य ने इस उपेक्षा को दूर करने का प्रयास किया है, जिससे इस विषय पर गहन अध्ययन की प्रेरणा मिली। संजीव का साहित्य आदिवासी समाज के प्रति गहरी संवेदनशीलता और सामाजिक न्याय की भावना से प्रेरित है। उनकी रचनाओं में आदिवासी समाज के शोषण, उनके संघर्षों और उनकी सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण की गहरी चिंता व्यक्त की गई है। यह अध्ययन संजीव की इसी सामाजिक दृष्टि और साहित्यिक प्रतिबद्धता को समझने का एक प्रयास है। आदिवासी समुदायों ने सदियों से अपने अधिकारों, जीवन शैली और संस्कृति को बनाए रखने के लिए संघर्ष किया है। संजीव की रचनाओं में इन संघर्षों को प्रमुखता से स्थान मिला है। उनके साहित्य में आदिवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान को बचाए रखने के प्रयास और बाहरी शक्तियों द्वारा उनके अधिकारों के दमन का जीवंत चित्रण मिलता है, जिससे इस विषय पर शोध की प्रेरणा प्राप्त होती है। संजीव का साहित्य सामाजिक न्याय और समानता की भावना से ओत–प्रोत है। उनके कथा साहित्य में आदिवासी समाज के अधिकारों, उनके संघर्षो और उनके शोषण के खिलाफ आवाज उठाई गई है। यह शोध इसी भावना से प्रेरित है कि समाज में हाशिए पर खड़े समुदायों के संघर्षो को साहित्य के माध्यम से समझा जाए और उनकी आवाज को सुना जाए। इस शोध की प्रेरणा संजीव की रचनाओं में आदिवासी समाज की जटिलताओं, उनके संघर्षों और उनकी सांस्कृतिक धरोहर को समझने और उसका साहित्यिक एवं सामाजिक विश्लेषण करने की इच्छा से उत्पन्न हुई है।

<u>साहित्यिक पुनरावलोकन (शोध से संबंधित पूर्ववर्ती कार्यो का अध्ययन)</u>

1. ''संजीव के उपन्यास में आदिवासी जीवन की समस्याएं'' किरणसिंह जी. बारैया, सरदार पटेल विश्वविद्याल, 2020

2. ''संजीव और शिवमूर्ति के कथा साहित्य में श्रम और प्रतिरोध का सौन्दर्य'' (विशेष संदर्भ में चुनी हुई कहानियां), सीमा यादव, वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय जौनपुर, 2003

3. संजीव का कथा–साहित्य संवेदना और शिल्प, रेखा कुमारी त्रिपाठी, कलकत्ता विश्वविद्यालय, 2015

4. ''संजीव का कथा साहित्य : विडम्बना एवं जीवन संघर्ष'' राजेश कुमार वर्मा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म0प्र0) 2021

5. संजीव के कथा साहित्य का वस्तु–शिल्पपरक अध्ययन, स्नेहा तिवारी, लखनऊ विश्वविद्यालय, 2010

6. संजीव के कथा साहित्य में हाशिये का समाज एक अध्ययन, सपना पाठक, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म0प्र0), 2023

7. संजीव के कथा–साहित्य में लोक चेतना, संतोष कुमारी, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2017

8. संजीव के कथा साहित्य में कोयलांचल की समस्याएं, सुनील कुमार साव, कलकत्ता विश्वविद्यालय, 2019

9. ''संजीव के कथा साहित्य में श्रमिक जीवन एवं यथार्थ बोध'', वन्दना, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 2018

10. संजीव के कथा साहित्य में उपेक्षित समाज का चित्रण, प्रा0 ढेपे प्रशांत नारायण, स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड, 2019

11. ''संजीव के कथा साहित्य में अभिव्यक्त समस्याएं'', गीता गोपाठ कुणकवठेकर, मुंबई विश्वविद्यालय, 2021

12. संजीव के कथा–साहित्य में आदिवासी समाज, ज्योति कुमारी मीणा, वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान, 2015

13. संजीव के कथा साहित्य में सक्रमणशील समाज के उभरते नए सवाल, क्षमा यादव, दिल्ली विश्वविद्याय, 2021

14. संजीव के कथा साहित्य में सर्वहारा समाज जीवन का चित्रण, संतोष रघुनाथराव रायबोले, डॉ0 बाबासहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, 2012

15. संजीव के साहित्य में समकालीन विमर्श, रजनी कुमारी, जम्मू विश्वविद्यालय, 2019

16. साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, ततहीर बानों रिजवी, मुंबई विश्वविद्यालय मुंबई, 2014

17. संजीव के उपन्यासों में आंचलिक एवं अनछुए संदर्भ, बर्षा राय, कलकता विश्वविद्यालय, 2018

18. ''संजीव के उपन्यास और साहित्यिक विमर्श'' गुर म्यारी यादव, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ब यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा, 2020

19. संजीव के उपन्यासों में आदिवासी स्त्री–जीवन का संघर्ष और परिवर्तन की चुनौतियां, सुश्री अंचला यादव, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, 2022

20. ''संजीव के उपन्यासों में व्यक्त आदिवासी जीवन संघर्ष'' कदम भगवान रामकिशनराव, स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़, 2013

21. ''संजीव के उपन्यासों में अभिव्यक्त आदिवासी समस्या के स्वरूप का अध्ययन, दीपा कनौजिया, जीवाजी विश्वविद्यालय, 2020

22. ''संजीव के उपन्यासों में आदिवासी समाज के विस्थापन से उत्पन्न संकट और संघर्ष : एक अनुशीलन'', प्रेम शंकर सिंह, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, 2022

23. संजीव के उपन्यासों में युग–बोध, शाजिया बी, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, 2021

विषय चयन का महत्व

संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी परिवेश, संस्कृति और संघर्ष पर अध्ययन का महत्व अत्यधिक है क्योंकि यह आदिवासी समाज के जीवन, उनकी संस्कृति और उनके संघर्षो का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। संजीव के साहित्य में आदिवासी समुदायों की अनदेखी, सामाजिक उत्पीड़न और हाशिए पर होने वाले संघर्षो को गहराई से उकेरा गया है। यह अध्ययन न केवल आदिवासी जीवन के जटिल पहलुओं को उजागर करता है, बल्कि उनकी संस्कृति की पहचान और अस्तित्व को सुरक्षित रखने की आवश्यकता पर भी ध्यान केंद्रित करता है। आदिवासी समाज के शोषण, उनकी सामाजिक–राजनीतिक स्थिति और आधुनिक समाज के साथ उनके टकराव को समझने में यह अध्ययन विशेष रूप से सहायक है। इसके माध्यम से आदिवासियों के अधिकारों, उनके विकास और उनके जीवन की कठिनाइयों पर गहन विचार किया जा सकता है। साथ ही संजीव के साहित्यिक दृष्टिकोण के आधार पर यह अध्ययन साहित्यिक आलोचना और आदिवासी समुदायों की वास्तविक स्थिति के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संजीव की कृतियां

कहानी संग्रह

तीस साल का सफरनामा, आप यहां है, भूमिका और अन्य कहानियां, दुनिया की सबसे हसीन औरत, प्रेत मुक्ति, प्रेरणास्रोत और अन्य कहानियां, ब्लैक होल, डायन और अन्य कहानियां, खोज, गली के मोड़ पर सूना–सा कोई दरवाजा।

उपन्यास

किसनगढ़ के अहेरी, सर्कस, सावधान नीचे आग है, धार, पांव तले की दूब, जंगल जहां शुरू होता है, सूत्रधार, आकाश चम्पा

नाटक

ऑपरेशन जोनाकी

यात्रा साहित्य

सात समंदर पार

बाल उपन्यास

रानी की सराय, डायन

शोध विषय के उदेश्य

1. संजीव के कथा साहित्य में जनजातीय समुदायों और पर्यावरण के चित्रण का विश्लेषण करना।

2. संजीव की रचनाओं में जनजातीय संस्कृति और परंपराओं के प्रस्तुतिकरण का अध्ययन करना।

3. संजीव की कहानियों में जनजातीय पात्रों द्वारा सामनाा किए गए सामाजिक–आर्थिक संघर्षो की जांच करना।

4. संजीव के कथा साहित्य में आधुनिकता के प्रभावों के तहत जनजातीय जीवन का विश्लेषण करना।

5. संजीव की कहानियों में जनजातीय पहचान को आकार देने में प्रकृति और भूमि की भूमिका का अध्ययन करना।

6. संजीव की रचनाओं में शोषण के खिलाफ जनजातीय प्रतिरोध के चित्रण का मूल्यांकन करना।

7. संजीव के कथा साहित्य में जनजातीय पर्यावरण मुद्दों और सांस्कृतिक संरक्षण के अंर्तसंबंध को समझना।

कृतियों पर बनी फिल्में

1. सावधान नीचे आग है उपन्यास पर काला हीरा नामक टेलीफिल्म।
2. 'प्रकाश झा प्रोडक्शन' द्वारा हिमरेखा कहानी पर फिल्म निर्माणधीन।
3. श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित फिल्म वेल डन अब्बा कहानी फुलवा का पुल पर आधारित।

पुरस्कार और सम्मान

1. प्रथम पुरस्कार : सारिका : सर्वभाषा कथा प्रतियोगिता, 1980
2. प्रथम कथाक्रम सम्मान लखनऊ, 1997
3. इंदु शर्मा स्मृति अंतर्राष्ट्रीय सम्मान, 2001
4. भिखारी ठाकुर लोक सम्मान, 2005
5. 'पहल' सम्मान, 2006
6. सुधा स्मृति सम्मान, 2008
7. सन् 1965 और 2003 तक इंडियन आयरन एंड स्टील कं. कुल्टी (पं0ब0) में रसायनज्ञ सम्प्रति : कार्यकारी सम्पादक, हंस, मासिक

शोध प्रविधि

संजीव समकालीन परिदृश्य में चमकते सितारे की तरह हैं उनके लेखन में भारतीयता, समाज, जीवन के संघर्षो, आकांक्षाओं, और आशाओं एक अनूठा

प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है संजीव हिन्दी साहित्य में साठोत्तरी दौर के बाद जनवादी कथान्दोलन के प्रायः साथ–साथ विकसित पीढ़ी के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक हैं। इस शोध पद्धति की परिपूर्णता के लिए सबसे पहले में अपने साहित्यकार की पुस्तकों को गम्भीरतापूर्वक पढ़कर उनकी संक्षिप्त प्रस्तावना दूंगी और फिर अध्याय क्रम में उपन्यास, आलोचना एवं वैचारिक गद्‌य, कहानियां, कविता संग्रह और कहानी संग्रह जिसमें आदिवासी जीवन का संघर्ष झलकता हो तथा अन्य समीक्षात्मक, लेखन पर तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत करूंगी। मेरा यह शोध कार्य, विभिन्न अध्यायों में आयामित रहेगा। और अन्त में उसे समेकित करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा। इस अध्ययन के तहत संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी परिवेश, संस्कृति और संघर्ष का विश्लेषण किया जाएगा। संजीव के प्रमुख कथा साहित्य, विशेष रूप से उनकी कहानियों और उपन्यासों का गहन अध्ययन और विश्लेषण किया जाएगा। इसमें आदिवासी जीवन की विशेषताओं, सांस्कृतिक तत्वों, और संघर्षों का ध्यानपूर्वक मूल्यांकन किया जाएगा। इस प्रविधि के तहत, संजीव की रचनाओं में आदिवासी पात्रों, उनके संघर्ष और उनके जीवन की स्थितियों को समझने के लिए सामग्री का गहन विश्लेषण किया जाएगा। विषयों, प्रतीकों और भाषाई विशेषताओं का अध्ययन करके आदिवासी संस्कृति की पहचान की जाएगी। संजीव के साहित्य में आदिवासी संघर्ष की प्रासंगिकता को समकालीन समाज में देखा जाएगा। यह प्रविधि यह विश्लेषण करेगी कि कैसे संजीव का साहित्य आज के समाज में आदिवासी मुद्दों को प्रस्तुत करता है और उनके संघर्षों को उजागर करता है। इससे साहित्य में प्रस्तुत आदिवासी संघर्ष की वास्तविकता का आकलन किया जाएगा। इस शोध प्रविधि के माध्यम से संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी परिवेश, संस्कृति और संघर्ष की सटीक और व्यापक समझ विकसित की जाएगी। अतः लेखन पर एक अच्छा खासा साक्षात्कार भी किया जाएगा। जिससे हमारे तथ्यों की एक तो प्रमाणिकता पृष्ट

होगी और दूसरे साहित्य के संबंध में उनके विचारों से भी अवगत हुआ जा सकेगा। मैं अपने अध्ययन को व्यापक और सारगर्भित बनाने हेतु पूरा प्रयत्न करूंगी।

भविष्य में शोध कार्य होने की संभावनाएं

संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी परिवेश, संस्कृति और संघर्ष पर आधारित अध्ययन भविष्य में शोध कार्य के लिए अनेक संभावनाओं को जन्म देता है। उनके साहित्य में आदिवासी समाज की गहराई, उनकी परंपराएं, संस्कृति और संघर्षों का जिस संवेदनशीलता से चित्रण किया गया है, वह समकालीन संदर्भों में बेहद प्रासंगिक है। भविष्य में इन मुद्दों पर शोध के माध्यम से आदिवासी अस्मिता, सामाजिक न्याय, और सांस्कृतिक सरंक्षण जैसे विषयों पर गहन अध्ययन किया जा सकता है। तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन के जरिए संजीव के साहित्य की तुलना अन्य भारतीय और वैश्विक आदिवासी लेखकों के साथ की जा सकती है। उनके कथा साहित्य में आदिवासी महिलाओं की स्थिति और उनके संघर्षों पर स्त्रीवादी दृष्टिकोण से शोध कार्य भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन सकता है। इसके अलावा, आदिवासी समाज और पर्यावरण के आपसी संबंध, संस्कृति और आधुनिकता के टकराव, तथा आदिवासी जीवन पर औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के प्रभाव पर अध्ययन की संभावनाएं हैं। साथ ही, संजीव के साहित्य को फिल्म, रंगमंच और दृश्य माध्यमों में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया और उसकी प्रभावशीलता पर शोध भी किया जा सकता है। इस प्रकार उनका साहित्य भविष्य के शोधकर्ताओं को आदिवासी समाज के विविध आयामों को समझने और साहित्यिक व सामाजिक विमर्श को समृद्ध करने का अवसर प्रदान करता है।

निष्कर्ष

संजीव के साहित्य में आदिवासी पर्यावरण, संस्कृति और संघर्ष का सूक्ष्म चित्रण यह स्पष्ट करता है क आदिवासी समुदाय केवल प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि उनके अस्तित्व, संस्कृति और जीवनशैली का अटूट हिस्सा हैं। आदिवासी समाज आधुनिकता और औद्योगिकीकरण के प्रभाव से निरंतर संघर्षरत है, जिसमें उनके प्राकृतिक आवास, सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं पर गंभीर खतरे मंडरा रहे हैं। संजीव अपने साहित्य के माध्यम से इन मुद्दों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठक न केवल आदिवासी जीवन के संघर्षों से परिचित होते हैं, बल्कि उनके अधिकारों और सामाजिक न्याय की आवश्यकता पर भी गहन विचार करते हैं। संजीव की कहानियों में आदिवासी समाज की समृद्धता, साहस और संघर्ष की भावना का चित्रण अत्यधिक प्रभावशाली है। वे केवल शोषण और अन्याय के विरूद्ध संघर्ष नहीं कर रहे हैं, बल्कि अपनी पहचान और गरिमा को बनाए रखने के लिए भी लगातार प्रयास कर रहे हैं। संजीव के साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी समाज की समस्याओं का समाधान केवल उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके लिए सांस्कृतिक संरक्षण और उनके प्राकृतिक संसाधनों के प्रति संवेदनशीलता की भी आवश्यकता है।

शोध ग्रंथावली

1. संजीव, ''फांस'', वाणी प्रकाशन द्वारा सन 2015 में प्रकाशित।

2. संजीव, सूत्रधार, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा सन 2003 में प्रकाशित।

3. संजीव – ‘‘जंगल जहां शुरू होता है’’, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा सन् 2000 में प्रकाशित।

4. संजीव, रह गई दिशाएं इसी पार, राजकमल प्रकाशन, द्वारा सन् 2018 में प्रकाशित।

5. संजीव, पांव तले की दुब, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा सन् 1995 में प्रकाशित।

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : संजीव एक परिचयावलोकन

(1.1) संजीव का जीवन परिचय

(1.2) संजीव के व्यक्तित्व के विविध आयाम

(1.3) संजीव का कृत्तित्व

(1.4) संजीव के साहित्य का संक्षिप्त परिचय

(1.5) सम्मान पुरस्कार

द्वितीय अध्याय : आदिवासी अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

(2.1) आदिवासी अर्थ एवं परिभाषा

(2.2) ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आदिवासी समाज

(2.3) भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए प्रावधान

(2.4) भारतीय आदिवासी समाज का वर्गीकरण

(2.5) आदिवासी समाज की समस्याएँ

तृतीय अध्याय : संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी परिवेश

(3.1) आदिवासी समाज का सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

(3.2) संजीव के कहानियों में पारिवारिक जीवन के विविध आयाम

(3.3) संजीव के उपन्यासों में व्यक्त आदिवासी जीवन का सामाजिक संघर्ष

(3.4) संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी समाज का प्राकृतिक परिवेश का चित्रण

(3.5) सामाजिक जीवन का विवरण

<u>चतर्थ अध्याय : संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी संस्कृति</u>

(4.1) संजीव के कहानियों में आदिवासी समाज की संस्कृति

(4.2) विवेच्य उपन्यासों में व्यक्त आदिवासी समाज की संस्कृति

(4.3) धर्म कल्पना

(4.4) सांस्कृतिक मान्यताएँ

(4.5) आदिवासी लोकसंस्कृति

<u>पंचम अध्याय : संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी संघर्ष</u>

(5.1) आदिवासी संघर्ष सामाजिक रूप से

(5.2) संजीव के कथा साहित्य में सांस्कृतिक संघर्ष

(5.3) आर्थिक संघर्ष

(5.4) संजीव के कथा साहित्य में राजनीतिक संघर्ष

(5.5) सामाजिक, सांस्कृतिक, समस्याएँ

षष्टम अध्याय : संजीव के कथा साहित्य में भाषा, शिल्प एवं शैली

(6.1) भाषा प्रयोग

(6.2) शब्द प्रयोग

(6.3) भाषा सौंदर्य के विधायक तत्व

(6.4) शिल्प

(6.5) शैली

- उपसंहार
- परिशिष्ट

– आधार

– संदर्भ सूची ग्रंथ/सहायक ग्रंथ

– पत्र–पत्रिकाएँ

– वेबसाइट